

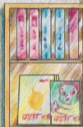
चलो किताबें खरीदने



रुक्मिणी बैनर्जी



संतोष पुजारी



Original Story (*English*) Going to Buy a Book
by Rukmini Banerji
© Pratham Books 2004
Fourth Hindi Edition: 2010

Illustrations: Santosh Pujari
Hindi Translation: Pratham Books Team

ISBN: 81-8263-049-5

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th 'C' Main, 6th 'B' Cross,
OMBR Layout, Banaswadi, Bangalore 560 043
☎ +91 80 25420925

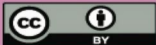
Regional Office:
New Delhi ☎ +91 11 41042483

Typesetting and Layout by: Trimiti Services

Printed by: XXXXXXXX

Published by:
PRATHAM BOOKS
www.prathambooks.org

The development of this book was sponsored by
Dubai Creek Round Table, Dubai, U.A.E.



Some rights reserved. This book is CC-BY-3.0 licensed.
Full terms of use and attribution available at:
<http://www.prathambooks.org/cc>

चलो किताबें खरीदने

लेखक
रुक्मिणी बैनर्जी

चित्रांकन
संतोष पुजारी

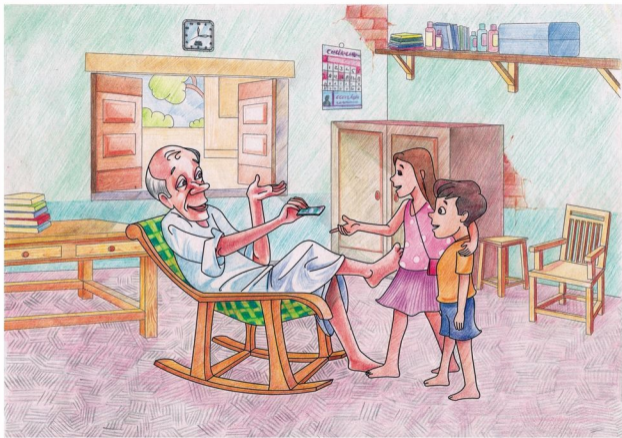
हिंदी अनुवाद
प्रथम पुस्तक समूह

एक दिन दादाजी ने मेरे भाई और मुझे कुछ पैसे दिये।

“जाओ! किताबें खरीद लाओ,” उन्होंने कहा।

हम दोनों बहुत खुश हुए।

हम दोनों को पढ़ना बहुत अच्छा लगता है।



क्या हम अभी जायें?
क्या हम बाद में जायें?
क्या हम आज चलें?
क्या हम कल जायें?
हमने तय कर लिया कि अभी जाते हैं।



क्या हमें बड़े बाज़ार जाना चाहिए?
क्या हमें छोटी दुकान में जाना चाहिए?
क्या हमें किसी के साथ जाना चाहिए?
क्या हमें अकेले जाना चाहिए?
हमने तय किया कि केवल हम दोनों
छोटी दुकान में जायेंगे।

BOOK SHOP



हमें किताबों की छोटी दुकान पसंद है।
यह छोटी ज़रूर है लेकिन यहाँ बहुत सी किताबें हैं।
दुकानदार हमें पहचानता है।
वह हमेशा हमारी मदद करता है।



क्या हमें ऐसी किताब खरीदनी चाहिए
जिसमें ढेर सारे चित्र हों?
क्या हमें वह किताब खरीदनी चाहिए
जिसमें खूब कहानियाँ हों?
क्या हम पतली सी किताब खरीदें?
हम तय नहीं कर पाये।



दुकानदार हमें देखकर मुस्कराया।
“बच्चों, आओ मेरे साथ,” उसने कहा।
“यह किताबें जानवरों के बारे में हैं।
वे परियों के बारे में हैं।
ऊपर वाली लड़ाइयों के बारे में हैं।
तुम्हें जो चाहिए, ले लो।”



मैंने कुछ किताबें उठायीं।
मेरे भाई ने कुछ किताबें उठायीं।
मैं फ़र्श पर बैठ गई।
वह कुर्सी पर बैठ गया।
और हम दोनों पढ़ते गये,
पढ़ते गये और पढ़ते गये।



कितनी शान्ति थी वहाँ!
कहीं कोई आवाज़ नहीं।
एक घंटा बीता।
दो घंटे बीते।
आखिर में, हम जान गये कि
कौन सी किताबें खरीदनी हैं।



दुकानदार हमें देखकर मुस्कराया।
मैंने एक मोटी किताब खरीदी
जिसमें बहुत सी कहानियाँ थीं।
मेरे भाई ने एक बड़ी किताब खरीदी
जिसमें बहुत सी तसवीरें थीं।



हम दौड़कर दादाजी के पास घर आये।
उनके बिस्तर पर चढ़कर बैठ गये।
उन्होंने अपने पास बैठा लिया।
हम पढ़ते रहे, पढ़ते रहे, पढ़ते रहे...



अपने अनुभव बताने में बच्चों को बहुत मजा आता है।
यह बच्चे बताना चाहते हैं कि उन्होंने अपनी मनपसन्द किताबें कैसे खरीदीं।
ऐसे ही बच्चों के अनुभव कुछ और किताबों में आपको पढ़ने को मिलेंगे।

हम बाज़ार गये

घर जाना है

चाचा की शादी

हमारी बालवाड़ी

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के
लिए www.prathambooks.org पर लॉग ऑन करें।
हमारी किताबें अंग्रेजी, हिन्दी, तमिल, तेलुगु, कन्नड, मराठी, गुजराती, बांग्ला,
पंजाबी, उर्दू व ओडिया में भी उपलब्ध हैं।



PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की बाल पुस्तकें

Age Group: 3-6 years

Chalo Kitaben Kharidane (Hindi)

MRP: Rs. 20.00

ISBN 81-8263-049-5



9 788182 630499